

# मिर्ची की खेती

## बेहतर फसल उत्पादन पद्धति



### मिर्च – एक परिचय

मिर्च एक मसाला फसल है जिसकी खेती भारत के कई प्रदेशों में की जाती है। इसका वानस्पतिक नाम कैप्सीकम एनम है। स्पाइसेज बोर्ड के अनुसार वर्ष 2012-13 में यह फसल लगभग 54 हजार हेक्टेयर में मध्य प्रदेश में लगाई गयी। प्रदेश में इसका उत्पादन लगभग 93 हजार टन के करीब है। निमाड़ में मिर्च खरीफ की कपास के बाद दूसरी मुख्य फसल है। मिर्च हेतु मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी मिर्च मण्डी खरगोन जिले के बेड़िया गाँव में स्थित है। धीरे-धीरे धार जिले के धामनोद में भी मिर्च की मण्डी प्रसिद्ध होती जा रही है।

मिर्च की फसल की अवधि सामान्यतः 140 से 180 दिन तक की होती है और फसल सामान्यतः 15 जून से 15 जुलाई तक खेतों में लगा दी जाती है। मिर्च के पौधे से हरी व लाल मिर्च दोनों तरह की फसल ली जा सकती है। एक सीजन में एक पौधे से लाल मिर्च का उत्पादन 8 से 10 बार लिया जा सकता है।

मिर्च का उपयोग हरी व लाल दोनों अवस्थाओं में किया जाता है। हरी मिर्च सामान्यतः भोजन में सब्जी के रूप में इस्तेमाल होता है। इसे सलाद, चटनी, इत्यादि के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं। प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) के बाद इसका इस्तेमाल अचार, सॉस इत्यादि के रूप में होता है। जबकि लाल मिर्च मुख्य रूप से खड़ी व पाउडर के रूप में मसालों में उपयोग होता है। पाउडर के लिये उपयोग होने वाले सूखे मिर्च के किस्म का चुनाव मुख्यतः उसके रंग, तीखेपन व स्वाद के आधार पर होता है।

### प्रश्न कं. 01 मिर्च की क्या उपयोगिता है?

उत्तर:- पौष्टिकता की दृष्टि से यह विटामिन एवं खनिज लवणों का अच्छा स्रोत है। इसमें विटामिन 'ए' व 'सी' की भरपूर मात्रा होती है और यह आँखों की रोषनी, हृदय रोगों के लिये लाभदायक है।

### प्रश्न कं. 02 मिर्च की फसल किस प्रकार के वातावरण में ली जा सकती है?

उत्तर:- मिर्च की खेती के लिये 15-35 डिग्री सेल्सियस तापमान तथा गर्म आर्द्र जलवायु उपयुक्त होती है। फसल अवधि के 130-150 दिन के अवधि में पाला नहीं पड़ना चाहिये। 40 सेन्टीग्रेड से अधिक तापमान होने पर इसके फल एवं फूल गिरने लगते हैं। इसके लिए 800-1000 मिमी. वार्षिक वर्षा उपयुक्त होती है।

### प्रश्न कं. 03 मिर्च की फसल के लिए कैसी मृदा की आवश्यकता होती है?

उत्तर:- हल्की से मध्यम काली मृदा, मिश्रित काली एवं लाल मिट्टी मिर्च के लिए उपयुक्त है जिसमें कार्बनिक पदार्थ पर्याप्त हो एवं जलनिकास की उचित सुविधा हो, में सफलतापूर्वक की जा सकती है। मिर्च की फसल जलभराव सहन नहीं कर पाती है। मिर्च को pH 6.5-8.00 वाली मिट्टी (वर्टीसोल्स) में भी उगाया जा सकता है।

### प्रश्न कं. 04 मिर्च की कौन-कौन सी किस्म उपयुक्त है?

उत्तर:- मसालों वाली किस्में:- पूसा ज्वाला:- इसके फल लम्बे होते हैं। यह शीघ्र तैयार (130-150 दिन) होने वाली किस्म है। पैदावार प्रति हेक्टेयर 15 से 20 क्विंटल (सूखी) होती हैं।

सिटी:- यह किस्म 160-180 दिन में तैयार हो जाती है। इसकी उपज क्षमता प्रति हेक्टेयर 12-15 क्विंटल (सूखी) होती हैं। इसके फल लम्बे आकार के होते हैं।

काशी अर्ली:- इस किस्म के पौधे से रोपण के मात्र 45 दिनों में प्रथम तुड़ाई प्राप्त हो जाती है जो सामान्य संकर किस्मों से लगभग 10 दिन पहले होती है। इस किस्म के फलों की तुड़ाई 6-8 दिनों के अन्तराल पर होती रहती है, जिससे 10-12 तुड़ाई आसानी से की जा सकती है। हरे फल का उत्पादन 300-350 क्वि./हे. प्राप्त हो जाता है। इसकी फसल लम्बी अवधि तक चलती रहती है। हरे फल उत्पादन के लिये एक यह एक उत्तम किस्म है।

**कल्याणपुर चमन:**— यह संकर किस्म है इसकी फलियाँ लाल, लंबी और तीखी होती हैं। इसकी पैदावार प्रति हेक्टेयर 25 से 30 क्विंटल (सूखी) होती है।

**पूसा सदाबहार:**— यह एक बारहमासी किस्म है जिनके एक गुच्छे में 6–22 फल लगते हैं। यह साल में 2 से 3 फसलें देती है। यह किस्म 150 से 200 क्विंटल प्रति हेक्टर हरी मिर्च की उपज देती है। यह किस्म वायरस रोग प्रतिरोधी है।

**तेजस्विनी:**— इसकी फलियाँ मध्यम आकार की एवं हरे रंग की होती हैं। फल सीधे, नुकीले, लगभग 10 से.मी. लम्बे होते हैं। प्रथम तुड़ाई पौध रोपाई के 75 दिनों बाद प्राप्त होती है। औसतन हरे फल का उत्पादन 200–250 क्वि/हे. प्राप्त हो जाता है। हरे फल उत्पादन के लिए अच्छी किस्म है।

**आर्का हरित (एम.एस.एच.—172):**— इस किस्म के पौधे लम्बे एवं सीधी बढ़वार वाले होते हैं। पत्तियाँ मध्यम आकार की, फल 6–8 से.मी. लम्बे, पतले, हरे रंग के होते हैं। पौध रोपाई के 50–55 दिनों बाद प्रथम तुड़ाई प्राप्त हो जाती है। हरे फलों का औसत उत्पादन 300 क्वि/हे. प्राप्त हो जाते हैं। हरे फल उत्पादन के लिए एक उत्तम किस्म है।

**भाग्य लक्ष्मी:**— यह सिंचित एवं असिंचित क्षेत्र में उगाई जाती हैं। असिंचित क्षेत्र में 8–10 क्विंटल एवं सिंचित क्षेत्र में 15–18 क्वि./हे. शुष्क फल देती है।

**आंध्रा ज्योति:**— यह किस्म पूरे भारत वर्ष में उगाई जाती है। यह प्रति हेक्टर 18–20 क्विंटल (सूखी) फल देती है।

**आर्का लोहित:**— इसके फल तीखे एवं पकने पर लाल रंग के होते हैं जो कि 200 से 210 दिन में तैयार होते हैं। उपज 35 क्विंटल प्रति हेक्टर है।

**पंजाब लाल:**— यह एक बहुवर्षीय किस्म है। यह लगभग 47 क्विंटल पके फल देती है। यह वायरस रोग से रोगराधी है।

**पंजाब सुर्खा:**— इसके फल 7 से.मी. लम्बे तथा वायरस से रोग रोधी किस्म है।

**सब्जी वाली किस्में:**— आर्का मोहिनी, आर्का बसंत, आर्का गौरव, इन्दिरा आदि।

**अन्य मुख्य किस्में:**— सूर्य रेखा, जवाहर मिर्च—218, एन.पी.—46, पंत सी.—1, पंत सी.—2, ए.एम.डी.यू.—1, सी.ओ.—2, काषी विष्वनाथ, काषी अनमोल, काषी सुर्ख, अर्का मेघना।

ये किस्में हरी मिर्च के उत्पादन के लिये प्रसिद्ध हैं। ये हरी मिर्च का उत्पादन 125–175 प्रति हेक्टर की उपज तक देती हैं।

### **प्रश्न कं.05 मिर्च की फसल की बीज दर क्या होनी चाहिए?**

उत्तर:— मिर्च की ओ.पी. किस्मों के 500 ग्राम तथा संकर (हायब्रिड) किस्मों के 200–225 ग्राम बीज की मात्रा एक हेक्टेयर क्षेत्र की नर्सरी तैयार करने के लिए पर्याप्त होती है।





### प्रश्न क्रं.06 मिर्च की रोपाई किस समय करनी चाहिए?

उत्तर:— मिर्च की रोपाई वर्षा, शरद, ग्रीष्म तीनों मौसम में की जा सकती है परन्तु मिर्च की मुख्य फसल खरीफ (जून-अक्टू.) में तैयार की जाती है। जिसकी रोपाई जून-जुलाई में, शरद ऋतु की फसल की रोपाई सितम्बर-अक्टूबर तथा ग्रीष्म कालीन फसल की रोपाई फरवरी-मार्च में की जाती है। रोपाई के लिये पौध 25-30 दिनों से अधिक पुरानी नहीं होनी चाहिए।

### प्रश्न क्रं.07 मिर्च की पौधशाला कैसे तैयार करना चाहिए?

उत्तर:— मिर्च की पौधशाला तैयार करने समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- मिर्च की पौधशाला की तैयारी के समय 2-3 टोकरी वर्मीकंपोस्ट या पूर्णतया सड़ी गोबर खाद 50 ग्राम फोरेट दवा / क्यारी मिट्टी में मिलाएँ।
- मिर्च की पौध तैयार करने के लिए बीजों की बुवाई 3 गुणा 1 मीटर आकार की भूमि से 15 सेमी उंची उठी क्यारी में करें।
- बुवाई के 1 दिन पूर्व कार्बन्डाजिम दवा 1.5 ग्राम / ली. पानी की दर से क्यारी को तर करे। घरेलू बीज इस्तेमाल कर रहे किसानों को सलाह है कि वो बीज को थायरम 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।
- अगले दिन क्यारी में 5 सेमी दूरी पर 0.5-1 सेमी गहरी नालियाँ बनाकर बीज बुवाई करें।
- बीज बोने के बाद गोबर खाद, मिट्टी व बालू (1:1:1) मिश्रण से ढकने के बाद क्यारियों को धान के पुआल, सूखी घास या पलाष के पत्तों से ढकें।
- अंकुरण के 10 दिन बाद कापर आक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

### प्रश्न क्र.08 मिर्च की फसल में सिंचाई प्रबंधन कैसे करना चाहिए?

उत्तर:— मिर्च की फसल को मिट्टी की किस्म, भूमि के प्रकार व वर्षा के आधार पर सिंचाई कर सकते हैं। यदि वर्षा कम हो रही हो तो 10 से 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करना चाहिए। यदि मिट्टी दोमट मिट्टी हो तो 10 से 12 दिन के अंतराल पर तथा ढालू भूमि पर 10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करना चाहिए। मिर्च की फसल में फूल व फल बनते समय सिंचाई करना अत्यन्त आवश्यक है। इस स्थिति में सिंचाई न करने पर मिर्च के फल व फूल छोटी अवस्था में गिर जाते हैं। इसके साथ ही मिर्च की फसल में पानी नहीं रुकने देना चाहिए।

### प्रश्न क्र.09 मिर्च की फसल में मल्लिंग का प्रयोग कैसे करना चाहिए व इसके लाभ बताइए?

उत्तर:— मिर्च फसल की आधुनिक खेती में सिंचाई के लिए ड्रिप पद्धति लगायी जा रही है तथा जमीन से नमी की हानि रोकने के लिए मल्लिंग का उपयोग किया जाता है। मल्लिंग काफी पुरानी पद्धति है। इसमें किसान खेत की नमी बचाने का प्रयत्न करते हैं। पहले किसान खेत में सूखे पत्ते, भूसे इत्यादि के द्वारा नमी बचाने का प्रयत्न करते थे। आधुनिक कृषि में सूखे पत्ते, भूसे इत्यादि के स्थान पर प्लास्टिक शीट का इस्तेमाल करते हैं। खरपतवार



नियंत्रण के लिए 30 माइक्रोन मोटाई वाली अल्ट्रावायलेट रोधी प्लास्टिक मल्टिचिंग शीट का प्रयोग किया जाता है जिससे खरपतवार प्रबंधन के साथ-साथ कम सिंचाई जल के उपयोग से बेहतर उत्पादन लिया जा सकता है।

**मल्टिचिंग के लाभ:**— मल्टिचिंग के उपयोग से पानी की, निंदाई गुड़ाई के खर्च की बचत होती है, मिर्च के उत्पादन व गुणवत्ता में वृद्धि होती है। निम्नतम सिंचाई व्यवस्था होने पर भी लाभ लिया जा सकता है।

**मिर्च में फर्टीगेशन तकनीक द्वारा पोषक तत्व प्रबंधन:**— मिर्च के पौधे, जिनको ऊठी हुई क्यारी पर लगाया गया हो, ड्रिप सिंचाई व्यवस्था का उपयोग करें तथा जल विलेय उर्वरकों जैसे 19:19:19 को सिंचाई जल के साथ ड्रिप में देने से उर्वरक की बचत के साथ साथ उसकी उपयोग क्षमता में भी वृद्धि होती है तथा पौधों को आवश्यकतानुसार एवं शीघ्र पोषक तत्व उपलब्ध होने से उपज तथा गुणवत्ता दोनों में वृद्धि होती है।

### प्रश्न कं.10 मिर्च की फसल में पोषक तत्व एवं खरपतवार प्रबंधन कैसे करना चाहिए?

उत्तर:— मिर्च की फसल में उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। सामान्यतः एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में 200–250 क्वि. गोबर की पूर्णतः सड़ी हुयी खाद या 50 क्वि. वर्मीकंपोस्ट खेत की तैयारी के समय मिलायें। नत्रजन 120–150 किलो, फास्फोरस 60 किलो तथा पोटाष 80 किलो का प्रयोग करें।

क.	तत्व का नाम	व्यापारिक नाम	उपयोग मात्रा
1	नत्रजन	यूरिया	4–6 बैग / हे.
2	फास्फोरस	एस. एस. पी.	2.5–3 बैग / हे.
3	पोटाष	म्युरेट आफ पोटाष	2–3 बैग / हे.
4	मैग्नेषियम, सल्फर	मैग्नेषियम सल्फेट	20–25 किलो / हे.
5	जिंक सल्फर	जिंक सल्फेट	5–10 किलो / हे.

किसानों की सुविधा के लिये जमीन के विभिन्न ईकाइयाँ नीचे दी गई है।

**एक हेक्टेयर = 2.5 एकड़ = 5 बीघा**

पादप नियामक (हार्मोन) का प्रयोग:— पुष्प आते समय 0.25 एम.एल. नैथलिन एसिटिक एसिड (एन.ए.ए.) प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करने से पुष्पों के झड़ने में कमी आती है तथा उपज लगभग 15–20 प्रतिषत तक बढ़ सकती है। 400 पी.पी.एम. प्रति लीटर पानी में इथ्रेल का घोल बनाकर छिड़काव करने से ग्रीष्म व शीतकालीन फसलों की उपज बढ़ जाती है।

**खरपतवार प्रबंधन:**— सामान्यतः मिर्च में पहली निंदाई 20–25 तथा दूसरी निंदाई 35–40 दिन पश्चात करें या डोरा या कोलपा चलायें। हाथ से निंदाई या डोरा कोलपा को ही प्राथमिकता दें जिससे खरपतवार नियंत्रण के साथ साथ मृदा नमी का भी संरक्षण हो। मल्टिचिंग का प्रयोग करें।





## प्रश्न कं.11 मिर्च की फसल में कीट प्रबंधन कैसे करें?

उत्तर:—मिर्च में जलवायु परिवर्तन के साथ कीटों का प्रकोप भी बढ़ गया है। अंधाधुंध कीटनाशकों के छिड़काव के कारण मिर्च की फसल आज के समय में काफी खर्चीली हो गई है। मिर्च के कुछ मुख्य कीटों, उनके पहचान के लक्षण और उनके रोकथाम के कुछ बेहतर उपायों को नीचे की टेबल में दिया गया है।

कं.	कीट का नाम	पहचान एवं उपचार	
1	थ्रिप्स एवं माहो	पहचान	पत्तियों के निचले हिस्से पर जूओं के समान दिखाई देते हैं।
		उपचार	नीम का तेल 30–35 एम.एल. प्रति पम्प या इमिडाक्लोरोपिड 5–7 एम.एल. प्रति पम्प
2	सफेद मक्खी	पहचान	पत्तियों के निचले हिस्से पर सफेद रंग के दिखाई देते हैं।
		उपचार	नीम का तेल 30–35 एम.एल. प्रति पम्प थायोमिथाक्साम 10 ग्राम प्रति पम्प एवं डाईफेन्थुरान 20 ग्राम प्रति पम्प
3	मकड़ी	पहचान	पत्तियों के निचले हिस्से पर दिखाई देते हैं। यह रस चूसते हैं जिससे पत्तियाँ नीचे की ओर सिकुड़ जाती हैं।
		उपचार	नीम का तेल 30–35 एम.एल. प्रति पम्प स्पाईरोमेसीफेन 10 एम.एल. प्रति पम्प तथा क्लोरफेनापायर 20 एम.एल. प्रति पम्प
4	फल छेदक इल्ली	पहचान	यह इल्ली फलों में छिद्र कर नुकसान करती है।
		उपचार	नीम का तेल 30–35 एम.एल. प्रति पम्प एवं इण्डोक्साकार्ब 15 एम.एल. प्रति पम्प डालें।
5	कटुआ इल्ली सफेद ग्रब	पहचान	कटुआ इल्ली पौधों को आधार से काट देती है।
		उपचार	नीम की खली 1000 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर डालें। फोरेट 10 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर डालें।

नीम का तेल दिये गये लगभग सभी कीटों के प्रबंधन में प्रभावी होता है। यह रासायनिक कीटनाशकों का एक बेहतर विकल्प है। किसानों को सलाह दी जाती है कि रासायनिक कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग की जगह नीम के तेल, अन्य बायोपेस्टीसाइड जैसे— गौमूत्र, सड़ी छाछ इत्यादि का प्रयोग करें। यदि इनसे कीटों का रोकथाम न हों तभी रासायनिक कीटनाशकों का संतुलित मात्रा में प्रयोग करें।



## प्रश्न कं.12 मिर्च की फसल में वायरस की रोकथाम कैसे करें?

उत्तर:— यह रोग मिर्च का एक बहुत ही भयानक रोग है जिसके कारण क्षेत्र में किसानों की फसल पिछले 3 वर्षों से बर्बाद हो रही है। अनियमित कीटनाशकों का छिड़काव, अंधाधुन्ध उर्वरकों का प्रयोग एवं तापमान में उतार चढ़ाव इसके मुख्य कारण हैं। इसके अलावा वायरस को एक खेत से दूसरे खेत में फैलाने का कार्य सफेद मक्खी करती है। यह तीव्र गति से फैलता है। इसमें पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं। फल बनना बन्द हो जाते हैं या छोटे आकार के बनते हैं एवं फूल गिर जाते हैं तथा पूरी फसल नष्ट हो जाती है। मिर्च की पौधशाला तैयार करते समय अगर निम्न सावधानियाँ रखें तो वायरस के प्रकोप में कमी लाई जा सकती है—

1. प्रमाणित बीज का उपयोग करें।
2. फसल चक्र अपनायें।
3. जिस खेत में पहले मिर्च, सोयाबीन, मूंग, भिण्डी की फसल ली हो उसमें पौधशाला तैयार न करें।
4. पौधशाला के लिये अच्छी धूप वाले स्थान जहाँ पानी ना रुके का चयन करें।
5. पौधशाला के चारों ओर कपड़े या जाली से बाउण्ड्री बना दें। कपड़े या जाली पर गौमूत्र/नीम का तेल/सड़ी छाछ से हर 4-5 दिन पर छिड़काव करते रहें। इससे पौधशाला की कई प्रकार के कीटों व जानवरों से बचाया जा सकता है।
6. अधिक से अधिक जैविक संसाधनों (नीम, गौ-मूत्र) का उपयोग करें।
7. प्रमाणिक कीटनाशकों का छिड़काव करें।
8. उर्वरकों का संतुलित उपयोग करें।
9. सफेद मक्खी एवं अन्य कीटों के नियन्त्रण के लिए पीले प्रपंचों का उपयोग करें।

## प्रश्न कं.13 मिर्च की फसल में रोग प्रबंधन कैसे करें?

कं.	रोग का नाम	पहचान एवं उपचार	
01	आद्र गलन	<b>पहचान</b>	यह फफूँद जनित रोग है। इसमें पौधा सतह से गलकर गिर जाता है। जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
		<b>उपचार</b>	नीम की खली का प्रयोग करें। कार्बेन्डाज़िम (15-25 ग्रा./ पम्प) का छिड़काव करें।
02	एंथ्रेक्नोज	<b>पहचान</b>	इसमें शाखाये सूखने लगती हैं। फलों पर छोटे काले गोल आकार के धब्बे बनकर सूखने एवं सड़कर दुर्गन्ध करते हैं।
		<b>उपचार</b>	रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर बाहर फेंके तथा हेक्साकोनाज़ोल 20-25 एम.एल/पम्प का छिड़काव करें।
03	उकटा रोग	<b>पहचान</b>	इसमें पौधा मुरझाकर सूख जाता है।
		<b>उपचार</b>	नीम की खली 300 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर डालें एवं मेन्कोजेब 20 ग्राम प्रति पम्प उपयोग करें।
04	जीवाणु पत्ति धब्बा	<b>पहचान</b>	पत्तियों पर हल्के पीले रंग के धब्बे बन जाते हैं। पौधे पीले होकर सूख जाते हैं।
		<b>उपचार</b>	स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 2-5 ग्राम प्रति पम्प एवं कापर आक्सीक्लोराईड 40-45 ग्राम प्रति पम्प उपयोग करें।



## प्रश्न कं.14 मिर्च की फसल से कितनी उपज प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर:—वैज्ञानिक विधि से उन्नत किस्मों से सूखी 20–25 किं/हे. तथा संकर किस्मों से 30–40 किं/हे. मिर्च का उत्पादन प्राप्त हो सकता है।

**मिर्च की तुड़ाई करने का सही समय व पहचान:—** मिर्च की तुड़ाई करने के सही समय की पहचान फसल के रंग के आधार पर की जाती है। उदाहरण के लिये हरी मिर्च की फसल लेते समय फसल जब पूर्ण रूप से विकसित (रंग हल्का हरा, पौधे के सभी फलों का लगभग एक समान आकार) हो जाये तो फल तोड़ लेना चाहिए। हरी मिर्च को सामान्यतः प्लास्टिक के बैगों में भरकर रखा जाता है। हरी मिर्च के फलों को 7–10 से. तापमान तथा 90–95 प्रतिशत आर्द्रता पर 14–21 दिन तक भण्डारीत किया जा सकता है। भण्डारण हवादार स्थान में करें।

इसी तरह लाल मिर्च लेने के लिये पौधे पर ही मिर्च का फल गाढ़ा लाल, पूर्ण विकसित होने पर फलों को तोड़ लेना चाहिए।

### मिर्च सुखाने का तरीका

निमाड़ में मिर्च को सुखाने के लिए धूप विधि का उपयोग किया जाता है जिसमें मिर्च को धूप में सुखाया जाता है अर्थात् मिर्च के फल पौधे पर ही पूर्णतः लाल हो जाए तब उन्हें पौधों से तोड़ लिया जाता है। तोड़ने के बाद उसे धूप में फैला दिया जाता है और 2 से 3 दिन के अंतराल पर उन्हें पलटाया जाता है। उसके पश्चात् 8 से 12 दिन होने पर जब मिर्च को हाथ में लेकर हिलाने पर छन-छन की आवाज आती है तब उसे किसी छाँव वाले स्थान पर या घर में किसी भण्डारग्रह में एकत्रित किया जाता है। एकत्रित करने के पश्चात् इसमें से रोग ग्रसित, टूटी फूटी, अधपकी मिर्च को अलग कर लिया जाता है। इसके पश्चात् पूर्णतः सूखी लाल मिर्च को जूट के बैगों में भरकर रख दिया जाता है।

हरी मिर्च के परिवहन के समय ध्यान दें कि वाहन में एक के ऊपर एक बैग की संख्या तीन से चार से ज्यादा ना हो। इससे ज्यादा होने पर सबसे नीचे के बैग में रखी मिर्च पर ज्यादा वजन पड़ेगा और दबाव के कारण नुकसान हो सकता है जिससे फसल के व्यापारिक मूल्य में कमी आ सकती है।

लाल मिर्च में 4–5 बैग से ज्यादा एक के ऊपर एक नहीं रखने चाहिए नहीं तो सूखी मिर्च टूट सकती है जिससे बाजार भाव कम हो जाता है।





## प्रश्न क्र.15 मिर्च की खेती में खर्च कैसे कम करें?

उत्तर:- मिर्च की खेती काफी खर्चीली खेती मानी जाती है। इसका मुख्य कारण मिर्च की खेती में रासायनिक उर्वरक व दवाओं पर किसानों की अत्यधिक निर्भरता है। मिर्च की फसल में खर्च कम करने के लिए किसानों को रासायनिक उर्वरक व दवाओं के संतुलित उपयोग के साथ इनके जैविक विकल्पों जैसे केंचुआ खाद, नीम की खली, गोबर की खाद, हरी खाद, बायोपेस्टीसाइड, नीम तेल आदि का उपयोग भी करना होगा। किसान चारानाषक रसायनों का उपयोग न करके निंदाई गुड़ाई करें तो भी खर्च में कमी आयेगी। इसके अलावा कीटों को किसान मित्र कीटों जैसे चिड़िया आदि के द्वारा नियंत्रित करना चाहिए। कीटों का यांत्रिक नियंत्रण पीला चिपचिपा बोर्ड, फिरोमेन ट्रेप व न्युक्लियर पोली हायड्रोसिस का उपयोग कर सकते हैं।

### कुछ ध्यान रखने योग्य बातें:

- ☞ प्रमाणित बीज का उपयोग करें।
- ☞ मिर्च की फसल में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- ☞ कार्बन्डाजिम फफूंदनाशी से पौधशाला के स्थान को उपचारित करें।
- ☞ जिस खेत में पहले मिर्च, सोयाबीन, मूँग, भिण्डी की फसल ली हो उसमें पौधशाला तैयार न करें।
- ☞ पौधशाला के चारों ओर कपड़े या जाली से बाउण्ड्री बना दें। कपड़े या जाली पर गौमूत्र / नीम का तेल / सड़ी छाछ से हर 4-5 दिन पर छिड़काव करते रहें। इससे पौधशाला की कई प्रकार के कीटों व जानवरों से बचाया जा सकता है।
- ☞ वायरस से ग्रसित पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें।
- ☞ रासायनिक उर्वरकों व दवाईयों का संतुलित मात्रा में उपयोग करें।

अधिक जानकारी हेतु अपने क्षेत्र में कार्यरत डी.एस.सी. के फील्ड यूनिट से सम्पर्क करें।

मनावर 9407139343 | कुक्षी 9644523913

मुख्य स्रोत तथा तकनीकी परामर्श:  
कै.वी.के. धार, म.प्र.

निर्माण टीम:  
महेन्द्र रन्डवा (एम एस सी अग्रीकल्चर)  
अमीत त्रिपाठी (स्नातक-कृषि उद्यमिता प्रबंधन)  
मोहन शर्मा (कृषि अभियन्ता)

वित्तीय सहायता: आरबीएस फाउन्डेशन ● रतन दोराबजी टाटा ट्रस्ट (आरडीटीटी)

**dsc**  
Development  
Support  
Centre

**डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर**

सरकारी ट्युबवेल के पास, बोपल, अहमदाबाद-380 058 गुजरात  
फोन: 02717-235994 / 235995  
ई:मेल: [dsc@dscindia.org](mailto:dsc@dscindia.org); वेबसाइट: [www.dscindia.org](http://www.dscindia.org)